

॥ दोहा ॥

जय जय जल देवता, जय ज्योति स्वरूप ।  
अमर उडेरो लाल जय, झुलेलाल अनूप ॥

॥ चौपाई ॥

रतनलाल रतनाणी नंदन ।  
जयति देवकी सुत जग वंदन ॥

दरियाशाह वरुण अवतारी ।  
जय जय लाल साईं सुखकारी ॥

जय जय होय धर्म की भीरा ।  
जिन्दा पीर हरे जन पीरा ॥

संवत दस सौ सात मंझरा ।  
चैत्र शुक्ल द्वितिया भगऊ वारा ॥4॥

ग्राम नसरपुर सिंध प्रदेशा ।  
प्रभु अवतरे हरे जन कलेशा ॥

सिन्धु वीर ठट्ठा राजधानी ।  
मिरखशाह नरूप अति अभिमानी ॥

कपटी कुटिल क्रूर कूचिचारी ।  
यवन मलिन मन अत्याचारी ॥

धर्मान्तरण करे सब केरा ।  
दुखी हुए जन कष्ट घनेरा ॥8॥

पिटवाया हाकिम ढिंढोरा ।  
हो इस्लाम धर्म चाहुँओरा ॥

सिन्धी प्रजा बहुत घबराई ।  
इष्ट देव को टेर लगाई ॥

वरुण देव पूजे बहंभाती ।  
बिन जल अन्न गए दिन राती ॥

सिन्धी तीर सब दिन चालीसा ।  
घर घर ध्यान लगाये ईशा ॥12॥

गरज उठा नद सिन्धु सहसा ।  
चारो और उठा नव हरषा ॥

वरुणदेव ने सुनी पुकारा ।  
प्रकटे वरुण मीन असवारा ॥

दिव्य पुरुष जल ब्रह्मा स्वरूपा ।  
कर पुष्टक नवरूप अनूपा ॥

हर्षित हुए सकल नर नारी ।  
वरुणदेव की महिमा न्यारी ॥16॥

जय जय कार उठी चाहुँओरा ।  
गई रात आने को भौरा ॥

मिरखशाह नऊप अत्याचारी ।  
नष्ट करूंगा शक्ति सारी ॥

दूर अधर्म, हरण भू भारा ।  
शीघ्र नसरपुर में अवतारा ॥

रतनराय रातनाणी आँगन ।  
खेळूंगा, आऊँगा शिशु बन ॥20॥

रतनराय घर खुशी आई ।  
झुलेलाल अवतारे सब देय बधाई ॥

घर घर मंगल गीत सुहाए ।  
झुलेलाल हरन दुःख आए ॥

मिरखशाह तक चर्चा आई ।  
भेजा मंत्री क्रोध अधिकाई ॥

मंत्री ने जब बाल निहारा ।  
धीरज गया हृदय का सारा ॥24॥

देखि मंत्री साई की लीला ।  
अधिक विचित्र विमोहन शीला ॥

बालक धीखा युवा सेनानी ।  
देखा मंत्री बुद्धि चाकरानी ॥

योद्धा रूप दिखे भगवाना ।  
मंत्री हुआ विगत अभिमाना ॥

झुलेलाल दिया आदेशा ।

जा तव नरूपति कहो संदेशा ॥28॥

मिरखशाह नरूप तजे गुमाना ।  
हिन्दू मुस्लिम एक समाना ॥

बंद करो नित्य अत्याचारा ।  
त्यागो धर्मान्तरण विचारा ॥

लेकिन मिरखशाह अभिमानी ।  
वरुणदेव की बात न मानी ॥

एक दिवस हो अश्व सवारा ।  
झुलेलाल गए दरबारा ॥32॥

मिरखशाह नरूप ने आज्ञा दी ।  
झुलेलाल बनाओ बन्दी ॥

किया स्वरूप वरुण का धारण ।  
चारो और हुआ जल प्लावन ॥

दरबारी डूबे उतराये ।  
नरूप के होश ठिकाने आये ॥

नरूप तब पड़ा चरण में आई ।  
जय जय धन्य जय साईं ॥36॥

वापिस लिया नरूपति आदेशा ।  
दूर दूर सब जन क्लेशा ॥

संवत दस सौ बीस मंझारी ।  
भाद्र शुक्ल चौदस शुभकारी ॥

भक्तो की हर आधी व्याधि ।  
जल में ली जलदेव समाधि ॥

जो जन धरे आज भी ध्याना ।  
उनका वरुण करे कल्याणा ॥40॥

॥ दोहा ॥

चालीसा चालीस दिन पाठ करे जो कोय ।  
पावे मनवांछित फल अरु जीवन सुखमय होय ॥

॥ ॐ श्री वरुणाय नमः ॥

